परस्पर आपसी
नियमित सम्पर्क एक महत्त्वपूर्ण पहलू है।

संरचनात्मक प्रकार्यवाद (Structural Functionalism)

संरचनात्मक प्रकार्यवाद या प्रकार्यवाद समाजशास्त्र की एक प्रमुख अवधारणा इस प्रकार्यवादी सोच के विचार को विकसित करने वाले विचारकों में दु (1858-1917) तथा टॉलकाट पार्सन्स (1902-1979) का नाम उल्लेखनीय है। सिद्धान्त का अमेरिकी समाजशास्त्रियों के नजर में विशेष स्थान था।

प्रकार्यवादी सिद्धान्त के समर्थक विचारक यह मानते हैं कि समाज की क्रि व्यवस्थित तरीके से चलती है और इसलिए यह समाज को एक व्यवस्था के रू देखते हैं। इनका मानना है कि सामाजिक व्यवस्था को व्यवस्थित रूप से च रखने में विभिन्न तत्त्वों के बीच आत्मनिर्भरता पाई जाती है।

अत: समाज के व्यवस्थित स्वरूप को बनाए रखने में विभिन्न समूहों तथा संस्थ का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। उल्लेखनीय है, कि समाजशास्त्र में प्रकार्यवा सिद्धान्त का जनक इमाइल दुर्खीम को माना जाता है। इन्होंने इस सन्दर्भ में बताया कि समाज में एकता बनाए रखने में धर्म, नैतिक आधार प्रदान करते हैं, क्योंकि ध नैतिक मूल्य के माध्यम से समाज के एकांकी स्वरूप को प्रदान करते हैं। अ प्रकार्यवाद को समझना महत्त्वपूर्ण है।

प्रकार्यवाद की परिभाषाएँ

विद्वानों द्वारा दी गई प्रकार्यवाद की परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं

- रेडक्लिफ **ब्राउन** के अनुसार, "प्रकार्य एक आंशिक क्रिया द्वारा उस सम्पू क्रिया को दिया जाने वाला योगदान है, जिसका कि वह एक भाग है।"
- **मर्टन** के अनुसार, "प्रकार्य वे अवलोकित परिणाम हैं, जो कि सामाजिक व्यवस्था के अनुकूलन या सामंजस्य को बढ़ाते हैं।"
- **ब्राउन** ने प्रकार्य को सम्पूर्ण के अनुरक्षण और कल्याण के अंश के योगदान के रूप में परिभाषित किया है।